युवा
समाज निर्माण में भूमिका

डॉ. सतीश कुमार • डॉ. मोनिका पुरी सेठी

युवा और आधुनिक उद्देश्यपरक शिक्षा

डॉ. राजेश कुमार **भारद्वाज**
पुस्तकालयध्यक्ष
फॉर स्कूल ऑफ़ मैनेजमेन्ट, नई दिल्ली

Citation
भारद्वाज, राजेश कुमार, युवा और आधुनिक उद्देश्यपरक शिक्षा इन युवा: समाज निर्माण में भूमिका, संपादक सतीश कुमार और सेठी, मोनिका पूरी । एप्पल बुक्स एवं इंद्रप्रस्थ अध्धयन केंद्र, नई दिल्ली: 2019. 82-89. ISBN-978-81-934623-7-9

प्रस्तावना

युवा और शिक्षा, ये दोनों शब्द अपने आप में परिपूर्ण और आवियोज्य है। शिक्षा को समझने के लिए हमें कुछ महान विचारो को समझना होगा। स्वामी विवेकानंद के अनुसार "मनुष्य की अन्तनिर्हित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।" और "अपने मन पर सम्पूर्ण स्वामित्व प्राप्त करना ही मनुष्य का उद्देश्य है। आज के सन्दर्भ मै शिक्षा न केवल युवाओ को रोजगार देने मै सक्षम, बल्कि उनके जीवन मूल्यों के साथ समाज और राष्ट्र निर्माण में सबसे ताकतवर हथियार बन सकता है। शिक्षा की दृष्टि मै युवा वही है। जिसने सीखना नहीं छोड़ा है।
श्री रामकृष्ण कहते थे, "जब तक मैं जीवित रहूँगा, तब तक मैं सीखता रहूँगा।"
महात्मा गाँधी ने कहा है "ऐसे जियो जैसे कि तुम्हे कल मर जाना हो। ऐसे सीखो जैसे कि तुम्हे हेमशा के लिए जीना हो।" इनका कहने का मतलब था की हमेशा सीखते रहो और हमेशा युवा रहो।
नेल्सन मंडेला ने कहा है "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसे आप दुनिया बदलने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं" और निसंदेह आज के युवा ये दुनिया बदलने मै सक्षम है। बशर्ते उनको उचित शिक्षा और मार्गदर्शन मिले।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति

भारत ने हमेशा शिक्षा को उच्च महत्व दिया है। प्राचीन भारत में पहली बार विकसित हुई वैदिक शिक्षा प्रणाली को गुरुकुल पद्धति के रूप में जाना जाता था। इस पद्धति ने गुरु और शिष्य के बीच संबंध को बढावा दिया और इसने एक अध्यापक केंदित प्रणाली स्थापित की जिसमे छात्र को कठोर अनुशासन और अपने शिक्षक के प्रति कुछ दायित्वों के अधीन रहना होता था। "दुनिया का प्रथम विश्वविधालय नालंदा विश्वविधालय 700 ई. पू. में स्थापित किया गया था। अपने सुनहरे दिनों में, इसमें 10,000 छात्र और 2,000 शिक्षक थे। नालंदा विश्वविधालय में पढाये जाने वाले विषयो थे विज्ञानं, खगोल-विज्ञानं, चिकित्सा, तत्वमीमांसा, दर्शन, सांख्य, योग, तर्कशास्त्र, वेद, और बौद्ध धर्म ग्रंथों तथा विदेशी दर्शनशास्त्र। नालंदा विश्वविधालय ने जातीय और देश सीमाओं से ऊपर उठते हुए चीन, इंडोनेलिया, कोरिया, जापान, फारस, तुकी और विश्व के अन्य भागों से छात्रों और विद्वानों को आकर्षित किया था।"(MHRD-NEP, 2016)
चरक, सुश्रुत, आयभवट्ट, भास्कराचार्य, चाणकय, पतंजलि, वात्स्यायन, मैत्रयी, और गार्गी जैसे भारतीय विद्वानों और विदुषियों तथा अनेक और विद्वानों ने गणित, खगोल, भौतिक एवं रसायन विज्ञानं, चिकित्सा और शल्य विज्ञानं, ललितकला, यांत्रिक तथा उत्पादन प्रोधोगिकी, सिविल इंजीनियरिंग और वास्तुकला, जहाज निर्माण और परिवहन, खेलकूद जैसे विविध क्षेत्रों में विश्व के ज्ञान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।
आजादी की लडाई के दौरान, श्री गोखले, श्री राम मोहनराय, पंडित मदन मोहन मालवीय और महात्मा गांधीजी जैसे अनेक नेताओं ने भारत के लोगों के लिए बेहतर शिक्षा की दिशा में काम किया है। शिक्षा में सुधार लाने का मुद्दा सवतंत्रता प्राप्ति के समय से ही भारत के विकास के एजेंडे में शीर्ष पर रहा है।

आधुनिक भारतीय शिक्षा पद्धति

शिक्षा की गुणवतता में सुधार लाने के लिए आवश्यक नीतिया बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा समय- समय पर अनेक आयोग गठित किये गए है। हाल ही मे, "मानव संसाधन विकास (एचआरडी) मंत्रालय ने एक नई राष्ट्रीय शिक्षानीति का प्रारूप तैय्यार करने के लिए अंतरिक्ष वैज्ञानिक श्री के कस्तूरीरंगन जी की अध्यक्षता में नौ सदस्यीय समूह का गठन किया है।" (Department of Higher Education-MHRD, 2017). हम उम्मीद करते है कि नई शिक्षा निति आज की उभरती हुई ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था और समाज की जरूरतों को पूरा करने मे सक्षम होगी और हमारे युवाओ की आककंशाओ को भी परिपूर्ण करेगी। आज की बदलते समाज मै युवाओं को सही मार्ग दर्शन की लिए, उनमे समाज, देश, और मानवता की प्रति उतरदायित्वा को बढ़ाने की लिए, आज की शिक्षा निति कैसी हो इस पर विचार किया जा सकता है।

शिक्षा नीति का उद्देश्य एवं लक्ष्य समाज और देश के वातावरण में एक ऐसी ऊर्जा का वर्धन करना है, जिससे देश के युवाओं की सोच में सकारात्मकता बढ़े, उनकी ऊर्जा का समाज और देश के विकास में ज्यादा उपयोग हो, उन्हें अपने व्यक्तित्व, शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास का अवसर मिले एवं वे देश और दुनिया के एक आदर्श नागरिक बन सके।

विधालय**,** महाविधालय और शोध शिक्षा की नीति पर हमें ज्यादा ध्यान देने के जरुरत है। क्योंकि विधालय के छात्र बचपन से युवा अवस्था मै होते हुए महाविधालय पहुंचते है। और इसी पड़ाव मैं हमें उनमे जीवन कौशल, देशप्रेम, देशरक्षा, नैतिक शिक्षा, नेतृत्व विकास और समाज सेवा की नींव डालनी होगी।

पाठ्यक्रम समरूपता और मूल्यांकन

हमें वर्तमान पाठ्यक्रमों का पुर्नमूल्यांकन कर अपनी सांस्कृतिक विरासत और पारम्परिक शिक्षा पद्धति के साथ आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के मेल से सभी विषयो को समाहित करते हुए कौशल एवं रोजगारपरक शिक्षा के मानदंड अपनाने की आवश्यकता होगी। सभी युवाओ को समान शिक्षा और समान अवसर के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत राष्ट्रीय स्तर पर सभी शिक्षा बोर्ड और विश्वविधालयो मै सभी विषयो का समान पाठ्यक्रम निर्धारित करने के आवश्यकता है

रोजगारोन्मुखी उच्चशिक्षा एवं शोधशिक्षा

देश की बढ़ती जनसँख्या को देखते हुए हमें रोजगारोन्मुखी उच्चशिक्षा एवं शोधशिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी। हमें उच्चशिक्षा एवं शोधशिक्षा का रोजगारपरक उद्योग संस्थानों के साथ सीधा सम्बन्ध स्थापित करना होगा। उच्चशिक्षा में वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की उच्च गुणवत्ता शिक्षण पद्धति अपनानी होगी।

हरित शिक्षा पद्धति

हमें पर्यावरण बदलाव और वैश्विक ताप बढ़ोतरी को ध्यान में रखते हुए, हरित शिक्षा पद्धति पर जोर देना चाहिए। हमें विज्ञान और प्रोधोगिकी की ज्यादा से ज्यादा उपयोग करते हुए हरित शिक्षा के अंतर्गत अंकीय (डिजिटल) माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। जिससे स्कूली शिक्षा में बच्चो के थैले का वजन कम हो सके और कागज के बचत के साथ पेड़ों को भी बचाया जा सके। इसको आगे बढ़ाने के लिए हमें युवाओ की पारिस्थितिकी के बुनियादी सिद्धांतों (Eco-friendship) से दोस्ती करानी होगी। इसके बुनियादी सिद्धांत है, निरंतरता एवं स्थिरता, पुनः उपयोग, कम से कम उपयोग और हरित शिक्षा के लिए शिक्षा। हमें शिक्षा मे eFirst (डिजिटल प्राथमिकता) की नीति अपनाने की आवश्यकता होगी, जो कि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यावरण के अनुकूल है।

प्रयोगशाला, पुस्तकालय और जिज्ञाषा (लैब, लाइब्रेरी और लर्निंग) का संयोजन

अगर हमें विश्व स्तर पर शोध शिक्षा मै खरा उतरना है तो हमें प्रयोगशाला और पुस्तकालय का प्रतिभा से मेल कराना होगा। आज के अंकीय युग मै कुछ लोग समझते है की गूगल सब जानता है। कुछ हद तक ये सही हो सकता है लेकिन ये भी सच है कि जो हम जानते है वही गूगल जानता है और जो हम नहीं जानते वो गूगल भी नहीं जानता है मतलब वही तो शोध के विषय है। जो गूगल पर नहीं मिलता वो पुस्तकालय मै मिलता है, जैसे की प्राचीन अमूल्य पुस्तके एवं सन्दर्भ लेख, नवीनतम वैज्ञानिक शोध जर्नल्स, और सांख्यिकीय डेटाबेसस, इत्यादि। हमारे भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंदर दामोदर दास मोदी जी ने 14 मार्च, 2015 को जाफना, श्रीलंका में अपने भाषण में कहा था "हमारे पुस्तकालय मानवीय इतिहास की धरोहर को सहेज कर रखते है। वो हमारे लिए एक कीमती खजाने कि तरह है। जो एक सदी को दूसरी सदी से जोड़ते हुए नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से जोड़ने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। यहाँ पर मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूँ कि जब भी कोई आक्रांता किसी दूसरे देश पर अधिकार करता है। सबसे पहले वो उस देश की सभ्यता को नष्ट करता है। उसके पुस्तकालयों और प्रतीकों को जला देता है। तो आप इनका महत्व देश की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा और शिक्षा मैं योगदान के नजरिये से समझ सकते है।

युवाओ के मौलिक कर्तव्य और उत्तरदायित्व

एक तरफ हमें अपनी स्कूल शिक्षा से लेकर अनुसन्धान शिक्षा तक को सुढ़ढ़ करना होगा वही दूसरी तरफ युवाशक्ति को पहचानते हुए उनमे अपने समाज और देश के प्रति उत्तरदायित्व को निखारना होगा। युवाओ को भी अपना उद्देश स्पष्ट करते हुए अपने देश और समाज कि सेवा मे अपना तन, मन, और धन बलिदान करने के लिए अवसर कि तलाश मे रहना चाहिए।

युवाओ को अंधविस्वास से दूर**,** वैज्ञानिक दर्ष्टिकोण अपनाते हुए, अपने सद कृतो से, सवयं का, अपने परिवार का, अपने मोह्हले का, अपने गाँव का, अपने जिले का, अपने प्रान्त का और देश का उथान करना चाहिए। जिससे विश्व मे इनका नाम रोशन हो सके। आज के वैज्ञानिक युग में हमारे लिए पीछे लौट कर जाना मुश्किल है। क्योंकि हमने अपने आराम के लिए विकास किया और विकास कि होड़ मे पर्यावरण का गंभीर नुकसान किया है। और पृथ्वी पर उपलब्ध ज्यादातर संसाधनों को हम खत्म कर चुके है बाकि को ख़त्म करने पर आमादा है। चूँकि विज्ञान ने नई-२ समस्याएं भी खड़ी कर दी है, जैसे कि घातक हथियार और खतरनाक बीमारियां इसलिए हमें अब आगे ही बढ़ना होगा। और सिर्फ वैज्ञानिक दृष्टि के साथ ही इन सब समस्याएं का समाधान खोजना होगा।

बुरी सीखों को भूलना।

अच्छी चीजें सीखना बहुत महत्वपूर्ण कला है लेकिन इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और मुश्किल कला है बुरी सीखों को भूलना। हमारे युवाओ को समय -२ पर आत्म मंथन चाहिए और उन सभी बुरी धारणाओं, मान्यताओं को और जो भी गलत सीखा है। उसका विश्लेषण करे याद रखे जीवन एक ही बार मिलता है और इसका सर्वोच्च उद्देश्य है मानवता और मानवीय मूल्य अगर किसी वजह से, किसी के गलत मार्ग दर्शन से आप गलत पथ पर जा रहे है। तो संभल जाये। अभी कोई देर नहीं हुई है। आप रुक जाये और वापिस उद्देश्यपूर्ण सदमार्ग पर लौट आये।

देश के संसाधन देश के लिए

हम कई जगह पर लिखा पाते है कि देश कि सम्पति आपकी सम्पति। कुछ लोग उसे सच में अपनी एकलौती सम्पति मानकर उसका नुकसान करते है। इस बात को हमे समझना होगा और देश कि सम्पति को नुकसान से बचाना होगा। आपको एक जागरूक नागरिक के दायित्व निभाने होंगे। कुछ भ्रष्ट अधिकारी और नेता देश के धन को विकास के नाम पर गलत योजनाओ के माध्यम से बर्बाद करते है। इसलिए हर युवा को जागरूक रहकर सुचना के अधिकार के माध्यम से देश के धन को बचाना है। और देश कि सम्पति को देश के लिए ही समर्पित करना है।

अधिकारों से पहले कर्तव्य

आज के युवाओ को अपने अधिकारों के साथ-२ अपने कर्तव्य के प्रति भी उतना ही सजग रहना होगा, क्योंकि कर्तव्यों से अधिकार मिलते है। और अधिकार से मिले कर्तव्य को पूर्ण निष्ठां से करना होगा।

आजादी मे अनुशासन

हम घर से लेकर समाज तक, समाज से देश तक और देश से ऊपर उठकर हम संपूर्ण विश्व मै आजादी चाहते है। लेकिन मेरा मानना है कि आजादी मै अनुशासन सर्वोपरि है। क्योकि आजादी जल्द ही स्वार्थ मे परिवर्तित हो जाती है। अगर आजादी मै अनुशासन नहीं है तो एक की आजादी दूसरे की आजादी से टकरायेगी और आजादी से लड़कर आजादी स्वंम ख़त्म हो जाएगी।

एक सूत्र मे मानवता

आज के वैश्विक युग मै समाज से समाज और देश से देश जुड़े हुए है, चाहे वह आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और चाहे सुरक्षा का क्षेत्र हो, कोई भी देश बिना एक दूसरे के सहयोग प्रगति नहीं कर सकता, यह आज की परम आवश्यकता भी है। और मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के नए आयाम भी है।

वासुदेव कुटुंबकम

यह केवल एक वाक्य नहीं है, इसमें सम्पूर्ण जीवन विकास का सार छिपा है, अगर हम डार्विन के विकास चक्र को समझे तो मानव उसके सबसे शीर्ष पायदान पर बैठा हुआ है, उसे मनुष्य मात्र के साथ-२ उन सभी जीवो के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को निभाना होगा। जीवन विकास के दौरान जो बुराइया मनुष्य और समाज मै समय -२ पर आई है उन सब को हमारे युवाओ को समझना ही नहीं होगा बल्कि अपने विवेक से उन पर विजय भी प्राप्त करनी होगी। जाति, धर्म, पंथ, संप्रदाय के नाम पर बुराइयों को हराना होगा। समाज मैं प्रेम, सौहार्द, भाईचारा और नव समरसता स्थापित करनी होगी।

वैश्विक संशाधनो पर बराबर मौलिक अधिकार

एक महत्वपूर्ण बात जिसका आप युवाओ को ध्यान रखना होगा। भारत सहित सभी देशो का वैश्विक संशाधनो (जल, थल और आकाश) पर बराबर मौलिक अधिकार है। घटते प्राकर्तिक संसाधनो ने विश्व के देशो में प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ को और भी बड़ा दिया है। अब कुछ देश अपने संसाधनो को ख़त्म करके दूसरे देश की या फिर सामूहिक एवं सार्वजानिक संसाधनो पर नजर गड़ाए हुए है। उदहारण के तौर पर चीन ताकत के दम पर पुरे के पुरे दक्षिण चीन सागर पर अपना प्रभुत्व जमा रहा है। हमें सजग रहना होगा और अपने हिंदुस्तान के संसाधनो को ख़त्म होने से भी रोकना होगा और दूसरे देशो की कुदर्ष्टि से बचाना होगा। और उन सामूहिक एवं सार्वजानिक संसाधनो जिन पर विश्व के सभी देशो का अधिकार है उसमे अपना हिस्सा भी सुनिश्चित करना होगा।

युवाओ की राष्ट्रीय योजनाओ मै भागीदारी

युवाओ को देश की योजनाओ और नीतियों से खुद को जोड़ना होगा। अगर हमें देश को सच्चे अर्थो मै विकास के रास्ते पर आगे ले कर जाना है। तो हम युवाओ को देश की सभी राष्ट्रीय योजनाओ और नीतिओ मै सहभागी होना होगा। ये सभी योजनाए समाज के किसी न किसी तबके के कल्याण के लिए होती है। जैसे की दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना, दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्या योजना, ग्रामीण भण्डारण योजना, स्वच्छ भारत योजना, डिजिटल भारत, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन कार्यक्रम, एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम, किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, भारत स्टार्टअप और स्टैंडअप भारत, इत्यादि। युवाओ का कर्तव्य है कि वो स्वंय को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन योजनाओ से जोड़े जिनके माध्यम से वे समाज के हर तबके के कल्याण मे अपना सहयोग दे सकते है।

अंत मे, मैं कहुँगा, युवाओ को अपनी शिक्षा के माध्यम से अपने आप को जन-कल्याण, समाज सेवा और देश सेवा से जोड़ना होगा। युवाओ को समुदाय आधारित अनुसंधान उच्चशिक्षा के माध्यम से सामाजिक उत्तरदायित्व स्थापित करने होंगे। उन्हें अपनी सामाजिक जिम्मेदारी समझते हुए अपने जीवन कौशल को सुद्रृढ़ करते हुए, उन्हें देशप्रेम की भावना के साथ देश की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहना होगा, उन्हें देश की रक्षा के लिए सैनिक शिक्षा और प्रशिक्षण लेना चाहिए। और अपना सर्वश न्योछवर करने के लिए हमेशा तैय्यार रहना चाहिए।

अन्तोगत्वा, निष्कर्ष पर पहुंचते हुए हमें कहना होगा। अगर हमारा युवा शिक्षित होगा, तो वो अपने परिवार को शिक्षित ही नहीं करेगा बल्कि वह अपने सभी दायित्वों का निर्वाह भी करेगा। वह अपने परिवार, समाज और देश के आर्थिक, धार्मिक, न्यायिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा ही नहीं करेगा बल्कि देश की अखण्ता एवं सम्प्रभुता की रक्षा करने में भी सक्षम होगा। अगर हमारा युवा शिक्षित होगा तो देश शिक्षित होगा और अगर देश शिक्षित होगा तो भारत को विश्वगुरु बनने मै देर नहीं लगेगी। और जल्द ही महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर होगा।

References

Department of Higher Education-MHRD (2017). Constitution of thè Committee for thè draft National Education Policy. (F. No. 7-48/2015-PN-II, June 24, 2017) Accessed on 28 December, 2017 http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/ConstitutionOrderofCommittee.pdf

MHRD: New National Education Policy (2016). Some Inputs for Draft National Education Policy 2016) Accessed on 28 December, 2017, http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/Inputs_Draft_NEP_2016.pdf